IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राकृतिक गोद में बसा 'ततवानी' आस्था, चिकित्सकीय व पर्यटन स्थल : एक झलक

रघुवीर सिंह [1] & दीप सिंह[2]

[1] सहायक आचार्य हिंदी, राजकीय महाविद्यालय लंज (काँगड़ा) हिमाचल प्रदेश

[2] सहायक आचार्य अर्थशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय लंज (काँगड़ा) हिमाचल प्रदेश

सार : हिमाचल प्रदेश में अनेक गर्म पानी के चश्में विद्यमान हैं | जैसेः जिला कुल्लू में मणिकरण और वशिष्ठ व जिला मंडी में तत्तापानी स्थित हैं | इसके साथ ही जिला कांगड़ा के उपखंड शाहपुर में 'ततवानी' नामक स्थान पर भी एक गर्म पानी का स्रोत युगों से आज तक विद्यमान है | इस स्रोत का व्याख्यान बहुत ही कम पुस्तकों व पत्रिकाओं में उपलब्ध होता है | 'ततवानी' आस्था, चिकित्सकीय व पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है | पर्यटन की दृष्टि से आज भी 'ततवानी' अभी भी फलीभूत व विख्यात नहीं हो पाया है |

बीज शब्द: ततवानी, प्राकृतिक, जलस्रोत, कांगड़ा |

भारत विविधताओं का देश है | यहाँ हर तरह से विविधता विद्यमान है | प्राकृतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक व भाषाई आधार पर जो विविधता इस देश में है वही इसे महान भी बनाती है | भौगोलिक एवं प्राकृतिक आधार पर पेड़ों, नदियों, झरनों, जलस्रोतों, नालों व सरोवरों का संगम तथा विस्तृत फैलाव इसकी गोद में प्रफुलित होता है | यह अतुल खनिज सम्पदा से भरा पड़ा है[1] | वैसे भी भारतीय संस्कृति अरण्य परम्परा की रही है | प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों[2] ने इसी अरण्य सांस्कृतिक परंपरा का नैसर्गिक उद्बोधन अपने धार्मिक ग्रंथों में किया है | भारत षष्ट ऋतुओं का देश है इसलिए इसे स्वर्ग भूमि भी कहा गया है और देवता भी इसी भूमि पर जन्म लेने की कामना लेकर समय-समय पर इसी धरा पर अवतरित भी हुए हैं | प्राकृतिक खनिज सम्पदा का एक अदभुत मेल मानव शरीर से भी है | मानवीय काया भी इन्हीं प्राकृतिक पंचभूतों से बनी है, जिसमें पृथ्वी, आकाश, जल, वायु व अग्नि हैं[3] | जल मानवीय सरंचना हेतु सबसे उतम साधन व स्रोत है | जल ही जीवन है यह हम कह सकते हैं क्योंकि मनुष्य शरीर भी 70 प्रतिशत जल निर्मित ही है[4] | जल के हमारे देश में अनेक स्रोत हमें प्राप्त हैं जोकि नदियों, झरनों, नालों व सरोवरों के रूप में पूरे देश में बिखरा पड़ा है |

यहाँ हम हिमाचल प्रदेश के जिला काँगड़ा में परिस्थित एक जल स्रोत जिसका उद्गम स्थल वहीँ पर स्थित वनों से आच्छादित पहाड़ से है और यह गर्म जल नीचे एक छोटे से स्थान पर इकट्ठा होता है जहां पर स्नान के लिए कुण्ड बनाया गया है, यहाँ पर कुछ लोग एक साथ स्नान कर सकते हैं | यह पानी जिस कुण्ड में इकट्ठा होता है और लोग स्नान करते हैं वहां पर पानी का स्तर ज्यादा नहीं है | पानी सिर्फ व्यक्ति की कमर तक ही आता है यानी लगभग 4 फीट तक पानी रहता है | यह पानी ज्यादा गर्म भी नहीं है लेकिन स्नान करने के लिहाज से उपयुक्त गर्म है | इस स्थान का नाम उसकी अपनी विशिष्टता के आधार पर ही रखा गया है जिसका स्थानीय हिंदी व पहाड़ी नाम 'ततवानी' है | इस जल स्रोत के आधार पर ही इसके साथ लगते पूरे गाँव का ही नाम 'ततवानी' पड़ा है |

भौगोलिक स्थिति : यह जल स्रोत रैत (पठानकोट-मनाली राष्ट्रीय मार्ग-20) तहसील शाहपुर जिला काँगड़ा हिमाचल प्रदेश में आता है | यह काँगड़ा जिला मुख्यालय धर्मशाला से 33 किलोमीटर पश्चिम, मैकलोडगंज; तिब्बती बौद्ध धर्म के धर्मगुरु महामहिम दी दलाईलामा जी के पवित्र स्थल से 38 किलोमीटर, 14 किलोमीटर रैत से व 250 किलोमीटर हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से दूरी पर स्थित है | इसी के साथ विश्व प्रसिद्ध रॉक मंदिर मसरूर से 18 किलोमीटर दूरी पर स्थित है | समुद्र ताल से यहाँ की ऊंचाई 676 मीटर है[5] | अक्षांश 32.10007 उत्तरी व 76.269993 पूर्वी दक्षांश पर स्थित है |

साथ अवस्थित इलाके व उनसे इसकी दूरी : सलोल (07 कि० मी०), लंज खास (16 कि० मी०) मकरोटी (08 कि० मी०) नेरटी (10 कि० मी०) मछियाल (5 कि० मी०) अवस्थित हैं | इसी के साथ इसके आसपास शहरों की बात करें तो मुख्य रूप से धर्मशाला, डलहौजी, चंबा, पठानकोट स्थित हैं | इस स्थान तक जाने के लिए बस और अपनी गाड़ी से पहुंचा जा सकता है | यहाँ के लिए हिमाचल पथ परिवहन की बस सेवा भी उपलब्ध है | बस सेवा झीरबल्ला तक ही मिलाती है उसके उपरांत 2 किलोमीटर पैदल या गाड़ी से जाया जा सकता है | इसी के साथ रेलगाड़ी से सफ़र करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए ब्रॉड गेज रेलवे लाइन और उसके आगे रानीताल तक नैरो गेज रेलवे लाइन द्वारा रानीताल रेलवे स्टेशन पर उतर कर, यहाँ से 'ततवानी' 30 किलोमीटर की दुरी पर पड़ता है जिसके लिए रानीताल से बस मार्ग से होकर जाया जा सकता है |

आबादी और शैक्षणिक अनुपात : 2011 की जनगणना के अनुसार 'ततवानी' गाँव में कुल घरों की संख्या 43 है | जिसमें कुल 195 लोग रहते हैं | यहाँ की कुल जनसन्ख्य में महिला जनसँख्या का प्रतिशत 49.7 प्रतिशत है | यहाँ का कुल शैक्षणिक स्तर (साक्षरता) 76.4 प्रतिशत है जिसमें 36.9 प्रतिशत शैक्षणिक अनुपात महिलाओं का है | यहाँ की आबादी में जातीय अनुपात की बात करे तो कुल आबादी में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत 9.7 है तथा अनुसूचित जाति की आबादी का प्रतिशत शून्य है | यहाँ की आबादी में कामकाजी अनुपात 51.3 प्रतिशत है |

शिक्षा हेतु संस्थान : शिक्षा ही किसी भी समाज के उत्थान का आधारभूत ढांचा खड़ा करती है | 'ततवानी' में शिक्षा संस्थानों की बात करे तो 'ततवानी' में ही राजकीय प्राथमिक पाठशाला स्थित है | इसके बाद की शिक्षा यहाँ के बच्चों को सलोल स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला मिल जाती है | इसके साथ ही उच्च शिक्षा के भी संस्थान यहाँ उपलब्ध हो जाते हैं जिनमें राजकीय महाविद्यालय शाहपुर, राजकीय महाविद्यालय लंज, राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला और केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश विश्विद्यालय क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र, खनियारा व राजकीय आयुर्विज्ञान चिकित्सा महाविद्यालय टांडा स्थित हैं |

जल स्रोत की विशिष्टता : 'ततवानी' नैसर्गिक सौन्दर्य के साथ ही आत्मिक शांति हेतु भी यह एक उत्तम स्थान है | प्रकृति की गोद में अवस्थित यह स्थल धार्मिक भावनाओं के व्यक्तियों के साथ ही पर्यटन में रूचि रखने वालों को अपनी और आकर्षित करता है | यह स्थल अपने 'गर्म जल स्रोत' के लिए मशहूर है | यहाँ पर सिर्फ एक स्थान जहां के लिए 'ततवानी' को चिह्नित किया गया है, वहीँ पर ही पानी गर्म है | जिसका उद्गम स्थल वहीँ पर स्थित वनों से आच्छादित पहाड़ से है और यह गर्म जल नीचे एक छोटे से स्थान पर इकट्ठा होता है जहां पर स्नान के लिए कुण्ड बनाया गया है, यहाँ पर कुछ लोग एक साथ स्नान कर सकते हैं | यह पानी जिस कुण्ड में इकट्ठा होता है और लोग स्नान करते हैं वहां पर पानी का स्तर ज्यादा नहीं है | पानी सिर्फ व्यक्ति की कमर तक ही आता है यानी लगभग 4 फीट तक पानी रहता है | यह पानी ज्यादा गर्म भी नहीं है लेकिन स्नान करने के लिहाज से उपयुक्त गर्म है | बाकि साथ में बहने वाली गज खड्डु[6] का पानी सामान्य पानी की ही तरह है | गज खड्डु धौलाधार की पहाड़ियों से निकल कर लगभग 503 किलोमीटर का सफ़र तय करके पोंग डैम में जाकर मिलती है और यही पर यह ब्यास नदी की सहायक भी बनती है | गर्म जल स्रोत का तापमान सामान्य रूप 30 से 35 डिग्री सेल्सियस रहता है |

इसके साथ ही यहाँ पर भगवान शिव का मंदिर भी है, यह मंदिर भगवान भोले के भक्तों की आस्था का एक गूढ़ केंद्र है | भक्त भी अपने नाथ से अपने दिल का हाल बताने व यहाँ स्नान करने आते हैं | इसी कड़ी में हर वर्ष 'शिवरात्रि' के दिन एक विशाल मेला व भंडारे का आयोजन इस स्थल पर होता है | उस दिन यह स्थान आस्थावान भक्तगणों से पूर्णतः भरा रहता है | इसके साथ ही लोगों की यह भी आस्था है कि हर माह की संक्रांति के दिन यहाँ स्नान करना शुभ माना जाता है |

उत्पत्ति और स्थापना : इस स्थान की उत्पति और स्थापना को लेकर यह भी मान्यता है कि प्राचीन कालखंड में जब रियासतों का समय था, तब यह स्थान गुलेर रियासत[7] के अंतर्गत प्रतिस्थापित था | गुलेर रियासत की राजकुमारी का विवाह चंबा रियासत के राजकुमार से हुआ | विवाह उपरांत जब राजकुमारी को पालकी से चंबा ले जाया जा रहा था तब पालकी को विश्राम के लिए इस स्थान पर रखा गया | राजकुमारी ने जब इस स्थान पर पहाड़ से निकले गर्म पानी को देखा तो आश्चर्यचकित हुई और इसे देवीय वरदान मान कर इस स्थान के जीर्णोद्धार के लिए अपने पिता यानी तत्कालीन गुलेर रियासत के राजा से आग्रह किया | उसके बाद इसका जीर्णोद्धार गुलेर रियासत के राजा द्वारा करवाया गया जिसका

प्रतिरूप आज भी देखने को मिल जाता है क्योंकि इसकी जो दीवारें बनी हैं, उसमें सीमेंट न लगा होने के बजाय उड़द (माह) की दाल का लेप पत्थरों को जोड़ने हेतु लगा हुआ है और यह लेप आज भी विद्यमान है |

इसी के साथ एक मान्यता यह भी है कि इस गर्म पानी की उत्पति हेतु साधू-संतों या ऋषि-मुनियों ने घोर तप किया था और अपनी तपस्या में ही समाधिस्थ हो गए हैं | उनकी समाधि मंदिर परिसर में ही आज भी बनी हुई हैं | जिसके ऊपर शिवलिंग को अंकित किया गया है |

गर्म पानी का उद्गम जिस पहाड़ से होता है, उसके ऊपर 'भैरों' देव की प्रतिमा अंकित है और पानी निकलने वाले स्थान पर शेरमुख को बनाया गया है | यह पानी इसी शेरमुख से होकर ही बाहर आता है | प्राचीन समय से वर्त्तमान तक यह शेरमुख से ही उत्पन होता है | प्राचीन समय से आधुनिक काल तक यह शेरमुख पूर्णतः पानी से भरा हुआ प्रवाहित होता था लेकिन आज वर्त्तमान में यह घटकर आधा हो गया है | इसका यह कारण दिया जाता है कि आधुनिक काल में अंग्रेजों ने अपने कार्यकाल में यहाँ पर प्रवाहित व उद्गम गर्म जल के कारण को खोजने की चेष्टा की लेकिन वह इसमें असफल रहे | गर्म जल के पीछे के कारण को तो नहीं खोज पाए लेकिन यह पानी शेरमुख में बिलकुल ही कम हो गया | उसके बाद यहाँ के स्थानीय लोगों ने वरुण देव से क्षमा याचना की तब जाकर पानी फिर से बहने लगा लेकिन अविरल पानी की यह धारा आधी ही बढ़ सकी | यह जल अपनी पूरी अविरल धारा में पुनः पूर्णतः पूर्ण शेरमुख भरकर वापिस नहीं आया | आज भी यह गर्म पानी शेरमुख से आधे से थोडा सा ही ज्यादा निकलता है |

वर्तमान में इस स्थान की महता और विशिष्टता के आधार पर ही भारत सरकार के मुद्रण मंत्रालय के द्वारा राजकीय महाविद्यालय लंज जिला काँगड़ा को उसकी वार्षिक पत्रिका हेतु इसी नाम 'ततवानी' को अंकित किया गया है | राजकीय महाविद्यालय लंज 'ततवानी' के शीर्षक नाम से ही अपनी वार्षिक पत्रिका का संपादन कर रहा है, जिसमें महाविद्यालय के छात्रों की सृजनशील प्रतिभा को विकसित होने का भरपूर मौका मिलता है |

'ततवानी' जल स्रोत की उपयोगिता : यह जल स्रोत स्थानीय लोगों के साथ ही साथ आस्थावान श्रध्दालुओं के लिए न सिर्फ आस्था का ही प्रतिक है, बल्कि इसके साथ ही इस जल स्रोत से जुडी यह भी मान्यता है कि यहाँ पर स्नान करने से कई चरम रोगों का निवारण हो आ जाता है | इसमें स्नान करना व्याधि-निवारक समझा जाता है |

मंदिर परिसर पूर्ण रूप से अभी महंत शिव गिर के सरंक्षण में ही चल रहा है | इस परिसर को अभी तक पर्यटन के आधार पर विकसित नहीं किया गया है | यहाँ पुरे गाँव की बात करें तो वर्ष भर का मौसम शुष्क ही रहता है, केवल बरसात के समय में ही ज्यादा बारिश होती है | यहाँ के लोग आजीविका के लिए नौकरी के साथ ही वर्ष भर होने वाली फसलों पर ही निर्भर रहते हैं जिसमें मुख्य रूप से गेहूं, धान और मक्की की फसल होती है | यहाँ की मिट्टी लाल रंग की मिट्टी है जो खेती बाड़ी के लिए उपयोगी है | यहाँ की संस्कृति हिन्दू सम्प्रदाय से सम्बंधित है और यहाँ पर लोगों की शादियाँ भी हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार ही होती हैं | यहाँ के लोग शिव भगवान के साथ ही अन्य हिन्दू देवी देवताओं की पूजा भी करते हैं जिसके प्रमाण के रूप में यही मंदिर में शिव भगवान के साथ ही भैरो का मंदिर होना और साथ में ही लगते कुछ मुख्य मंदिर हैं जिनमें मुख्य रूप से मछेल माता का मंदिर और गगल रोड पर काथला माता का मंदिर भी है |

निष्कर्ष : इस जल स्रोत को लेकर बहुत सारे मान्यताओं और सच के साथ अभी भी इसको लकर प्रशासनिक स्तर पर एक वैज्ञानिक शोध की आवश्यकता है ताकि यहाँ पर उत्पन्न इस गर्म जल स्रोत की मान्यताओं और इसके पीछे छुपे बहुत बसे रहस्य जो अभी भी लोगों की जिज्ञासा का केंद्र हैं, उनको तर्क के आधार और आस्था के आधार पर सही और स्पष्ट रूप में उजागर हो सकें | इसके साथ ही इस स्थान को पर्यटन के दृष्टिकोण से भी विकसित करने की अभी बहुत आवश्यकता है | सरकार को इसकी तरफ विशेष ध्यान देते हुए इसको इको-टूरिजम के अंतर्गत विकसित करने का प्रयास करना चाहिए |

सन्दर्भ :-

1. गिरिराज साप्ताहिक, 2015, पृ० 7
2. गिरिराज साप्ताहिक, 2015, पृ० 7
3. The story of fine elements. E.W. Edmeends J.B. Hoblyn. (The Library of Modern Knowledge) Pp. VIII+264 (London : Cassell and co. Ltd., 1911)
4. H.H. Mitchell Journal of Biological Chemistry, volume 158, 3, 1945, Pp. 625-637
5. हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग
6. अलौकिक हिमाचल प्रदेश, जगमोहन बलोखरा, पृ० 44
7. अलौकिक हिमाचल प्रदेश, जगमोहन बलोखरा, पृ० 421